समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

मासिक समाचार–पत्रिका

प्रवेशांक

एक वायरस बनाम समस्त विश्व

चीन के एक शहर वुहान की लैब से निकले एक वायरस कोरोना ने विश्व के सभी देशों को संकट में डाल दिया है। यूरोप से लेकर एशिया तक संक्रमण का दायरा लगातार बढ़ता जा रहा है, इस संक्रमण से बचने की कोई कारगर दवा अब तक प्राप्त नहीं हो सकी है। इस बीमारी से बचने का एकमात्र तरीका सामाजिक रुप से दूरी बनाना साबित हो रहा है। इसमें भारत ने कुछ हद तक सफलता भी पाई है। सही समय पर देश में लॉकडाउन लगाकर आदरणीय प्रधानमंत्री महोदय ने कोरोना की चेन को तोड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की है। जनसंख्या के अनुसार विश्व में दूसरे स्थान पर होने के बावजूद भारत में संक्रमित लोगों की संख्या विश्व के अन्य देशों

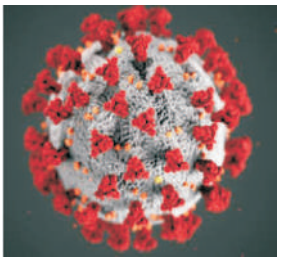

से कुछ हद तक कम है।पाकिस्तान, ईरान, ब्राजील, इंग्लैंड, जर्मनी, अमेरिका, रुस, जापान सहित सम्पूर्ण विश्व पूरी तरह संक्रमण के प्रभाव से ग्रसित हैं। जापान इमरजेंसी को बढ़ाने पर विचार कर रहा है। भारत ने राज्यों व शहरो को रेड, आरेंज, तथा ग्रीन तीन जोन में बाँटा है। अब यहाँ भी परिस्थितियाँ गम्भीर होती जा रही हैं। यह अत्यंत चिंतनीय है।

संपादक

मानवता की पुकार

सम्पूर्ण विश्व महामारी के इस दौर में पूरी तरह से लाचार नज़र आ रहा है। सम्पूर्ण विश्व समुदाय कोरोना वायरस के सामने असहाय हो गया है।जहाँ मृत्यु का आंकड़ा मिनटों के हिसाब से बढ़ता जा रहा है और संक्रमितों की संख्या में लगातार बढोतरी हो रही है, वहीं विश्व में फैले मानवता और समाज के खलनायक अपने दुराग्रहों में पूरी तरह से लिप्त है। देश के कुछ बड़े नेतृत्व कर्ता अर्थात नेता जी भी अपनी राजनीतिक रोटियों को सेंकने मे लगे हैं।इन्हें अपनी सत्ता लोलुप्ता के आगे सिसकती मानवता का एहसास नहीं, या फिर ये लोग भावना शून्य हो गए हैं। कोरोना महामारी में अपनी जान संकट में डाल कर लोगों का इलाज कर रहे डॉक्टर, नर्सें, पुलिसकर्मियों के ऊपर भारत में कुछ असामाजिक तत्व निरंतर हमला कर रहे हैं। इन्हें ना अपनी जान की परवाह है न इस बात की समझ कि ये लोग उन्हीं की रक्षा के लिए सतत प्रयत्नरत हैं। इन परिस्थितियों में हमें यह विचार करना होगा कि–'हमारा वास्तविक कर्तव्य क्या है?'हम किस तरह मानवता की सहायता कर सकते हैं। विश्व कें सर्वाधिक युवाओं के देश भारत में युवकों का कर्तव्य और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। समाज के गरीब मजबूर और रोजगार की तलाश में अपने राज्यों से आए हुए लोगों की भरपूर सहायता करनी चाहिए, इतना ही नहीं हमें उन जीवों पर भी ध्यान देना होगा, जो सड़क पर लावारिस घूम रहे हैं और लॉकडाउन तथा इमरजेंसी के इस काल में भोजन से वंचित हैं। हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य तो यही है कि हम विशेषज्ञों,डॉक्टरों,वैज्ञानिकों और देश के आदरणीय प्रधानमंत्री के दिशा निर्देशों के अनुसार अत्यधिक आवश्यक होने पर ही सड़कों पर निकलें और बाहर निकलने के दौरान सोशल डिस्टेंसिंग को ध्यान मे रखकर चेहरे को मास्क या कपड के द्वारा ढक कर रखना होगा। हाथों को समय–समय पर धोते रहना चाहिए जैसा कि हम लोगों को बार–बार निर्देशित किया जा रहा है। सड़कों व गलियों को अनावश्यक गंदा नही करना चाहिए। सड़कों पर यहाँ–वहाँ थूकने से बचना चाहिए। जिस प्रकार हमारे देश के आदरणीय प्रधानमंत्री हमारे देश सहित विश्व के अन्य देशों की भी दवा इत्यादि साधन से सहायता कर रहे हैं। उसी प्रकार हम सबको भी मानव मात्र की सहायता हेतु तत्पर रहना चाहिए। तभी दिखेगी हमारे देश की समृद्धता, तभी हम कहलायेंगे मानवता के सजग प्रहरी। क्योंकि यही है हमारे देश की सनातन संस्कृति।

सर्वे भवन्तु सुखिनह सर्वे सन्तु निरामयाः
विचार करें और समाज तथा मानवता का सहयोग करें। आज महामारी के इस दौर में मानवता पुकार रही है। यही है मानवता की पुकार।

तरूण सिंह

नो (बल) वायरस कोविड–19 को समर्पित

को वि ड चा ली सा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, 'रजक' लगावहि माथ।
बरनैं को रो ना कुजस, जो कछु लागहि हाथ।।
बुद्धिहीन तनु जानिकै, हनुमत देवहु साथ।
चालीसा कोविड लिखहुँ, होवहि पूरन नाथ।।

#जय कोविड उन्निस बलहीना।
नो(बल) नाम तबहिं तोहि दीन्हा।।
#चीन दूत विचलित बलधामा।
को रो ना वायरस कुनामा।।
#भलहिं वीर कितनहुँ तू जंगी।
सुमति निवारि कुमति कौ संगी।।
#ना कोइ वरन न कोई वेषा।
फैल रह्यौ जग कुजस विशेषा।।
#दो हज़ार उन्नीस में जनमा।
टेस्ट – ट्यूब है तेरी अम्मा।।
#बहुत दिनन यहि बात छिपाई।
जा कारन जग आफ़त आई।।
#नगर वुहान जनम तू पाया।
चीन बाप नैं तो कूँ जाया।।
#ख त र ना क बाप हिं औलादा।
ना तू नर है ना ही मादा।।
#जिन पिग की तू आज्ञा मानहिं।
हयाँ नाले में मौहड़े गाढ़हिं।।
#जिन भारत सूअर पहिचाना।
चीनी पिग कह देंइ सम्माना।।
#जा बोतल में तोय समाया।
वा कूँ तोड़ धरा पै आया।।
#हा – हा का र वु हा न मचाया।
फिर तो कूँ इटली पहुँचाया।।
#इटली नैं हल्के में लीन्हा।
जी – भर नाश वहाँ पर कीन्हा।।
#जगह – जगह फिर पहुँच बनाई।
खूब हवा में मौज़ उड़ाई।।
#फ़िर ईरान औ' फ्रांस फँसाये।
स्पेन हु के होश उड़ाये।।
#अ म री का को हू नहिं छोड़ा।
जी – भर तोड़ा और निचोड़ा।।
#संग मिला डब्लू एच ओ का।
नैंकु न रोका, नैंकु न टोका।।
#भारत में ससुराल सै आया।
खूब नचाया, खूब छकाया।।
#साथ मिला मौलाना जब सै।
असल फ साद भया फ़िर तब सै।।
#जोरि जमात मूरखन मरकज़।
देस – बिदेस सै आए सज–धज।।
#साथ पाय इनका इतराया।
इत – उत धाया खूब छकाया।।
#नंग – नाच हू जी – भर कीन्हा।
नंग जमातिन नैं सँग दीन्हा।।
#जड़ फ–साद की साद मौलाना।
भूला अल्ला औ' कुरआना।।
#चूहा सम छिप गया बिले में।
जगह मिली नहिं किसी किले में।।
#जा दिन पकड़ में आ जाएगा।
बहुत पिटेगा, पछताएगा।।
#संग जमाती जो आमिंगे।
संग पिटिंगे , पछतामिंगे।।
#छिपे – छिपे जो डोल रहे हैं।
मरन हेतु मग खोल रहे हैं।।
#गु न ह गा र प क ड़े जा इं गे।
जू ते – च प्प ल ब हु खा इं गे।।
#नाँ य ब चा व न वा रे हुं गे।
अ ब ब स नं गे सा रे हुं गे।।
#दु नि या कूँ तू ना च न चा या।
दे स सै क ड़ न में तू धा या।।
#भारत में आ ग़लती कीन्ही।
घोर कै पी में हयाँ पै चीनी।।
#मोदी कौ हयाँ राज चलै है।
जो कहि देवै नाहिं टलै है।।
#लॉक डाउन करि रोक लगाई।
जमातियन की शामत आई।।
#भगौ हरामी, कहाँ भगौगे।
थूक – थूक सब यहीं मरौगे।।
#मरकज़ सै मरघट पहुँचौगे।
या फ़िर ह वा ला त पहुँचौगे।।
#भारत में अब दाल न गलनी।
और चाल अब नैंकु न चलनी।।
#मग जा चीन जु चाहै बचिवौ।
बन्द करा दिंगे तव नचिबौ।।
#जिनपिंग कूँ कहि दीजो जाकै।
कोइ वायरस यहाँ न झाँकै।।
#इनकी नहिं दिखलावै चमकें।
सब रस हयाँ पै पीमें जमकें।।
#चीनी पीमें चमगादड़ रस।
भारतीय पी जाँय वायरस।।
पवन तनय किरपा करी, कारज कीन्हों पूर्ण।
कोविड चालीसा रची, 'रजक' काज सम्पूर्ण।।

रचयिता: डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'

समृद्ध भारत जागृति

ऊं

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

पूर्ण बंदी एक समीक्षा

वैश्विक स्तर पर कोरोना नाम की महामारी को झेलती मानव सभ्यता के सामने तमाम वैज्ञानिक शोधों के उपरांत त्वरित सुरक्षा का एक ही उपाय सामने आया अपने आप को पूर्णतया घरों में बंद कर लेने का परंतु यह कठिन निर्णय था, किसी भी देश के लिए मानवीय मूल्यों को ध्वस्त करने वाली इस विकट समस्या के जन्मदाता चीन व इसका पोषण करने की इच्छा रखने वाले अमेरिका के लिए यह परिस्थिति अंजानी नहीं थी , वोहान सिटी में कोरोनावायरस को विकृत करने वाला वैज्ञानिक दल के एक मुख्य सदस्य द्वारा इस वायरस की सौदेबाजी के दौरान चीनी फौज द्वारा उसको मार गिराने के समय वायरस के विस्फोट से उत्पन्न हुई इस परिस्थिति में भविष्य की संभावनाओं को जानते हुए चीन ने तुरंत ही वोहान सिटी पूर्णतया बंद कर अपने मुख्य नगरों को सुरक्षित करने की कोशिश की परंतु मानवीय नैतिक आदर्शों का इस प्रकार हनन प्रकृति कहां तक सहन करती कोरोना के प्रकोप से चीन भी नहीं बचा ,इधर अमेरिका भी परिस्थिति की गंभीरता से अनजान नहीं था उसने सुरक्षा हेतु कोशिशें तो की लेकिन सारा ध्यान केंद्रित रखा अपनी अर्थव्यवस्था पर जिससे विश्व मंच पर उसकी चौधराहट बरकरार रहे परिणाम उसे भोगना ही था ऐसी विषम परिस्थितियों में जहां संपूर्ण विश्व इस कोरोना के आतंक से त्रस्त अपने आपको निर्णय लेने की स्थिति में अक्षम पा रहा था हमारे देश के प्रधानमंत्री महोदय ने भारतीय परंपरागत चिंतन का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए जान भी है जहान भी है, का सार्थक संबोधन दिया, आर्थिक मंदी की जरा भी परवाह न करते हुए उन्होंने भारत में पूर्ण बंदी का ऐलान कर दिया, यहां यह भी ध्यान देने का विषय है कि इस हेतु भी उन्होंने सर्वप्रथम जनता को भावनात्मक रूप से प्रोत्साहित किया जनता कर्फ्यू से लेकर पूर्ण बंदी का आज तक का सफर मुख्य रूप से भावनाओं पर आधारित है ,हां धीरे–धीरे अब इसमें भय भी शामिल हो रहा है ,पुलिस कर्मियों द्वारा की जा रही सख्ती के नाम पर हिंसा उचित नहीं है ,परंतु यहां भी जन–साधारण को भी परिस्थितियों की गंभीरता को समझना होगा। अत्यंत ही खेद का विषय है कि समाज के तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग के लोग भी गंभीर परिस्थितियों में भी राजनीतिक आलोचनाओं में ही व्यस्त हैं, विपक्ष ने तो खुद ही अपनी स्थिति हास्यास्पद बना ली है ,ऐसी परिस्थिति में हमारे देश के सभी नागरिकों का कर्तव्य है कि महामारी के संकट से उबरने का एकमात्र उपाय इस पूर्ण बंदी को स्वीकार करें, दिए जा रहे निर्देशों का पालन करें समय सीमा बढ़ाए जाने से चिंतित होने के स्थान पर इसकी आवश्यकता को समझते हुए सहयोगात्मक रुख अपनाए। हाँलाकि समय के साथ इसमे रियायतो का दौर भी प्रारम्भ हो चुका है।

विशेष संवाददाता

विकास बनाम पर्यावरण

आज हम विकास की दौड़ मे इतना आगे निकल चुके है कि हमने पर्यावरण को पीछे छोड़ दिया है। आज मानव सभ्यता के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह विकास का चुनाव करें या पर्यावरण का, क्योंकि वह विकास का चुनाव करता है तो पर्यावरण को छोड़ना होगा या पर्यावरण का चुनाव करता है तो विकास को छोड़ना होगा। अतः आज हमे पर्यावरणीय हितो के साथ–साथ विकास का चुनाव करना है। वर्तमान समय मे विश्व का परिदृश्य हमें आगाह कर रहा है हम विकास और आविष्कारों की दुनिया में चाहे जितना आगे निकल जायें, हम प्रकृति से ऊपर नहीं हो सकते। हम चाहे जितने भी हथियार बना लें, चाहे जितने भी आविष्कार कर लें, प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की बात कर लें। लेकिन प्रकृति जब चाहेगी पर्यावरण को अपने अनुकूल बना लेगी। किसको पता था कि कोरोना वायरस जो आंखों से दिखाई नहीं दे सकता वह पूरी दुनिया को घर में बैठने के लिए मजबूर कर देगा, मुझे यह नहीं पता कोरोना प्राकृतिक वायरस है या मानव निर्मित वायरस, लेकिन देखते ही देखते वह 300000 से अधिक लोगों को मौत की नींद सुला चुका है और लाखों लोगों को संक्रमित कर चुका है। अभी तक इसका इलाज संभव नहीं हैं और पता नहीं इसका इलाज कब तक संभव होगा। आज विश्व के डॉक्टर और वैज्ञानिक कोरोना की वैक्सीन बनाने के लिए प्रयासरत हैं और मुझे उम्मीद है कि वह जल्द ही लक्ष्य तक पहुंचेंगे। लेकिन जिस पर्यावरण सुरक्षा के लिए हमने अरबों रुपए खर्च किये। विश्वस्तर पर अनेक प्रयास/सम्मेलन हुए और सारे प्रयास विकास और कुछ विकासशील देशों की झूठी महत्वाकांक्षा और धन लोलुप्ता की बलि वेदी पर चढ़ गये। इस वैश्विक महामारी ने वह काम कुछ महीनों में कर दिया, आज आसमान साफ है, नदियां पूरी तरह से स्वच्छ, पर्वत फिर से फूलों की घाटी में परिवर्तित हो गए हैं ,चिड़िया खुले और स्वच्छ आसमान में उड़ रही हैं ऐसा लगता है कि प्रकृति एक बार फिर अपने पुराने स्वरुप में धीरे–धीरे आ रही है। मैं तो उस परम सत्ता से यही प्रार्थना करूंगा कि वह हमें इस वैश्विक महामारी से जल्द ही निजात दे।वे सभी लोग स्वस्थ हो जो जीवन व मृत्यु से लड़ रहे हैं, मैं सभी डॉक्टर, नर्स, पुलिस,सेना के जवान , सफाई कर्मचारी,सरकारी,गैर सरकारी संगठन और वे सभी लोग जो इस महामारी से लड़ने के लिए आगे आये और देश व समाज की सेवा कर रहे हैं उन्हें सुरक्षित रखें और साहस दे।

आज हम विकास की दौड़ मे इतना आगे निकल चुके है कि हमने पर्यावरण को पीछे छोड़ दिया है। आज मानव सभ्यता के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह विकास का चुनाव करें या पर्यावरण का, क्योंकि वह विकास का चुनाव करता है तो पर्यावरण को छोड़ना होगा या पर्यावरण का चुनाव करता है तो विकास को छोड़ना होगा। अतः आज हमे पर्यावरणीय हितो के साथ–साथ विकास का चुनाव करना है। वर्तमान समय मे विश्व का परिदृश्य हमें आगाह कर रहा है हम विकास और आविष्कारों की दुनिया में चाहे जितना आगे निकल जायें, हम प्रकृति से ऊपर नहीं हो सकते। हम चाहे जितने भी हथियार बना लें, चाहे जितने भी आविष्कार कर लें, प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की बात कर लें। लेकिन प्रकृति जब चाहेगी पर्यावरण को अपने अनुकूल बना लेगी। किसको पता था कि कोरोना वायरस जो आंखों से दिखाई नहीं दे सकता वह पूरी दुनिया को घर में बैठने के लिए मजबूर कर देगा, मुझे यह नहीं पता कोरोना प्राकृतिक वायरस है या मानव निर्मित वायरस, लेकिन देखते ही देखते वह 300000 से अधिक लोगों को मौत की नींद सुला चुका है और लाखों लोगों को संक्रमित कर चुका है। अभी तक इसका इलाज संभव नहीं हैं और पता नहीं इसका इलाज कब तक संभव होगा। आज विश्व के डॉक्टर और वैज्ञानिक कोरोना की वैक्सीन बनाने के लिए प्रयासरत हैं और मुझे उम्मीद है कि वह जल्द ही लक्ष्य तक पहुंचेंगे। लेकिन जिस पर्यावरण सुरक्षा के लिए हमने अरबों रुपए खर्च किये। विश्वस्तर पर अनेक प्रयास/सम्मेलन हुए और सारे प्रयास विकास और कुछ विकासशील देशों की झूठी महत्वाकांक्षा और धन लोलुप्ता की बलि वेदी पर चढ़ गये। इस वैश्विक महामारी ने वह काम कुछ महीनों में कर दिया, आज आसमान साफ है, नदियां पूरी तरह से स्वच्छ, पर्वत फिर से फूलों की घाटी में परिवर्तित हो गए हैं ,चिड़िया खुले और स्वच्छ आसमान में उड़ रही हैं ऐसा लगता है कि प्रकृति एक बार फिर अपने पुराने स्वरुप में धीरे–धीरे आ रही है। मैं तो उस परम सत्ता से यही प्रार्थना करूंगा कि वह हमें इस वैश्विक महामारी से जल्द ही निजात दे।वे सभी लोग स्वस्थ हो जो जीवन व मृत्यु से लड़ रहे हैं, मैं सभी डॉक्टर, नर्स, पुलिस,सेना के जवान , सफाई कर्मचारी,सरकारी,गैर सरकारी संगठन और वे सभी लोग जो इस महामारी से लड़ने के लिए आगे आये और देश व समाज की सेवा कर रहे हैं उन्हें सुरक्षित रखें और साहस दे।

अभय प्रताप सिंह

समृद्ध भारत जागृति

आतंकवाद का नया अध्याय मोहरा बना तब्लीगी जमात

आतंकवाद के क्षेत्र में हमारे पड़ोसी देश की विशेषज्ञता विश्व विदित है। गरीबी की मार से जूझते कौम व मजहब के नाम पर गुमराह कर अपने मुल्क के नौजवानों को जिहाद के नाम पर हिंसा का पाठ पढ़ा कर इंसानियत को शर्मसार करने वाला आतंकवाद फैलाना यहां के हुक्मरानों की सत्ता पर अडिग रहने का मुख्य हथियार है। तानाशाही के ढांचे पर चलने वाले यहां के शासक वर्ग जहां कभी सत्ता के जाल में जकड़ कर अवाम को शिक्षा के विकासशील दौर से दूर रखना है ,तो वहीं दूसरी ओर ओछी महत्वाकांक्षा रखने वाले तथाकथित मौलानाओं की मदद से कुरान शरीफ की पवित्र आयतों की विकृति फैलाने वाले व्याख्या कर के अपने देश की आवाम को मानसिक गुलामी की जंजीरों में जकड़ कर उन्हें व्यक्तिगत वर्चस्व सत्ता की भूख की आग में मृत्यु (मौत) के मुंह में झोंकने में जरा भी लिहाज नहीं रखता। मानव बमों के रूप में अपने मुल्क के नौजवानों के इस्तेमाल करने की इनकी परंपरा से सारा विश्व परिचित है, परंतु अब इनकी कारगुजारियां हद पार कर चुकी हैं। आज सारा विश्व कोरोना नाम की बिभत्स महामारी की चपेट में झुलस रहा है हमारा भारत अपनी परंपरा अनुसार मानवीय मूल्यों की रक्षार्थ अपनी प्रजा की सुरक्षा व सारे विश्व की मदद मे जुटा है वहीं हमारे पड़ोसी देश के इमरान अपने मुल्क की आवाम को सुरक्षित करने की जगह अपनी शैतानी फितरत के अनुसार इस महामारी की आग में झोंक कर आतंकवाद का नया अध्याय रचने से बाज नहीं आ रहा है मज़हबी भावनाओं को व्यापार बना कर व्यक्तिगत संपत्ति ऐंठने में लगे ऐशो आराम की जिंदगी बसर करने वाले मौलाना की मदद से मिली भगत से अपने मुल्क की कोरोना से संक्रमित लोगों को कभी जिहाद के नाम की हवा दे कर उठे इंसानियत के दुश्मन के रूप में इस्तेमाल किए जाने की हरकत अब बर्दाश्त नहीं की जा सकती। वक्त आ गया है कि हमारे मुस्लिम भाइयों को सभी इस्लाम के पैगाम को समझना होगा। उनकी यादों की असलियत इन मौलवियों के महलों के दायरे में कैद होकर रह गई है। बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) के नाम पर हिंसा के फतवा जारी करने वाले इन मौलाना को बताना होगा कि चाँद तारे और सूरज कुदरत की कायनात के बुत नहीं तो क्या है? कायनात के शुरुआती दौर से ही इंसान ने इन्हीं चांद,तारों, हवा, पानी,आग और जमीन की इबादत की है। राम हो या कृष्ण मोहम्मद हो या ईसा मसीह यह तो सिर्फ इसलिए पूजे जाते हैं क्योंकि इन्होने कुदरत के इन बुतों का इंसानी जीवन में महत्व को समझाने की कोशिश की है। हमें बताया है कि इन बुतों की रुहानी ताकत सारी कायनात में बिना भेदभाव के बाँटी जाती है और इसी से हमारी जिंदगी रौशन होती है। हमारी अपने मुसलमान भाइयों से पुरजोर गुजारिश है कि वे इस्लाम के पैगाम को समझें, मतलब परस्त हुक्मरानों और मौलवी की साजिशों से बचें। हर मजहब हमें हमदर्दी की राह दिखाता है। हमें एक जुट होकर इन शैतानों को बताना होगा कि भारत– पाक सगे भाई है। हम एक हो कर रहेंगे और तभी संसार में अमन और शांति की मिसाल कायम हो सकेगी। इंसानी नस्ल को इंसानियत की भयंकर तबाही से बचाने के लिए हमें एकजुट होना ही होगा। मजहब उसके पैगाम को समझना होगा। हम दोनों ही कौम व दोनों मुल्कों के हुक्मरानों से ऐसी ही गुजारिश करते हैं।

विशेष संवाददाता

मरकज का मौलाना

पचपन बरस की उमर में,
मरकज़ का शैतान।
मारा–मारा फ़िर रहा,
दुनिया गई है जान।।
दुनिया गई है जान,
साद मौलाना तुझको।
आज नही तो कल,
भीतर हो जाना तुझको।।
'रजक' मजामत तो
होनी है तेरी पक्की।
भाग भेड़िए पीसेगा
तू जेल में चक्की।।

डॉ राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'

मानव और मशीन

आज सुबह जब माँ ने जगाया
बोली,देर तक सोया बोलो क्या पाया
मैंने कहा माँ सुन सुन सुन
ह ै रविवार आज क्यो मानती नहीं तुम
माँ ने कहा सुन मेरे लल्ला
प्रतियोगिता है ऐसा हुआ है हल्ला
एक तरफ मानव होगा, दूसरी तरफ मशीन
कोई होगा बुलंदियों पर,कोई देखेगा खिसकी जमीन
दौड़ा भागा सड़क पर आया
ऑटो ने स्कूल पहुँचाया
पहुँचा जब मैदान तो, दूर से देखा हमने
दौड़ रहे थे दोनों लिए बिना एक साँस
जीतेगा वो ही आखिर में , ऐसा था उनका विश्वास
चली प्रतियोगिता बहुत देर तक
मेरा दिल करता धक धक धक
कौ न जाने कब क्या हो आगे
कौन डटे कौन रण से भागे
सहसा एक ठोकर आया
मानव गिरा फिर उठ नहीं पाया
आज मानवता देख रही थी खिसकी हुई जमीन
एक तरफ था मानव दूसरी तरफ मशीन

अविनाश नारायण गुप्ता

समृद्ध भारत

नाद

पुष्पांजलि

ॐ

'समृद्ध भारत' यह पत्रिका नाद योगी संगीत मनीषी श्री डॉ राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक' के मानवता व राष्ट्र के प्रति उनके उच्चादर्शों से प्रेरित व उन्हें समर्पित है।

तनुज कुमार

नाद एक संक्षिप्त परिचय

नादानुसंधान एक शोध आधारित बौद्धिक प्रतिष्ठान है,जो शोध विद्वानों, वैज्ञानिकों, डॉक्टरों,इंजीनियरों, दार्शनिकों, मीडिया पर्सन की मदद से श्री तनुज कुमार द्वारा जुलाई 2011 में युग परिवर्तन के लिए अस्तित्व में आया था। मानव समाज की भलाई के लिए आधुनिक विज्ञान और प्रौ□गिकी के साथ वेदों का ज्ञान ताकि सांस्कृतिक विरासत और महान सभ्यता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सके। महाविस्फोट के सिद्धांत के अनुसार नाद की उत्पत्ति स्वर्ग और प्रकृति का संयोग है। पूरे ब्रह्मांड का निर्माण नाद पर आधारित है। नाद के बिना हम किसी भी प्रकार की संगीत,की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। इसके अलावा ज्ञान को ध्वनि की आवृत्ति के बिना नहीं समझा जा सकता है, जो नाद से उत्पन्न होता है। दूसरे शब्दों में ,हमारा पूरा ब्रह्मांड नाद से विकसित हुआ है। हमारा संगठन सुप्रसिद्ध संगीत मनीषी, कवि कलाकार और दार्शनिक डॉ राजेंद्र कृष्ण और नाट्य महर्षि साहित्य भूषण डॉक्टर ब्रज बल्लभ मिश्रा और विश्व विख्यात संगीत–लेखक डॉ लक्ष्मीनारायण गर्ग से प्रेरित है। हमें गर्व है कि हम मानव समाज की समृद्धि के लिए उनके पद चिह्न के तहत सही दिशा देने के लिए निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

संस्कृति सिंह

समस्त आदरणीय पाठक बन्धुओं से सप्रेम सादर अनुरोध है कि आप अपने सुझाव अपनी जिज्ञासाओं तथा लेख आदि के प्रकाशन हेतु हमसे सम्पर्क कर सकते हैं। आपके द्वारा किये गये सम्पर्क से हमें अति प्रसन्न्ता होगी।

सप्रेम धन्यवाद

अनुरोधकर्ता–सम्पूर्ण सम्पादकीय विभाग

समृद्ध भारत

अनुसंधान

श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित वा□–यन्त्र

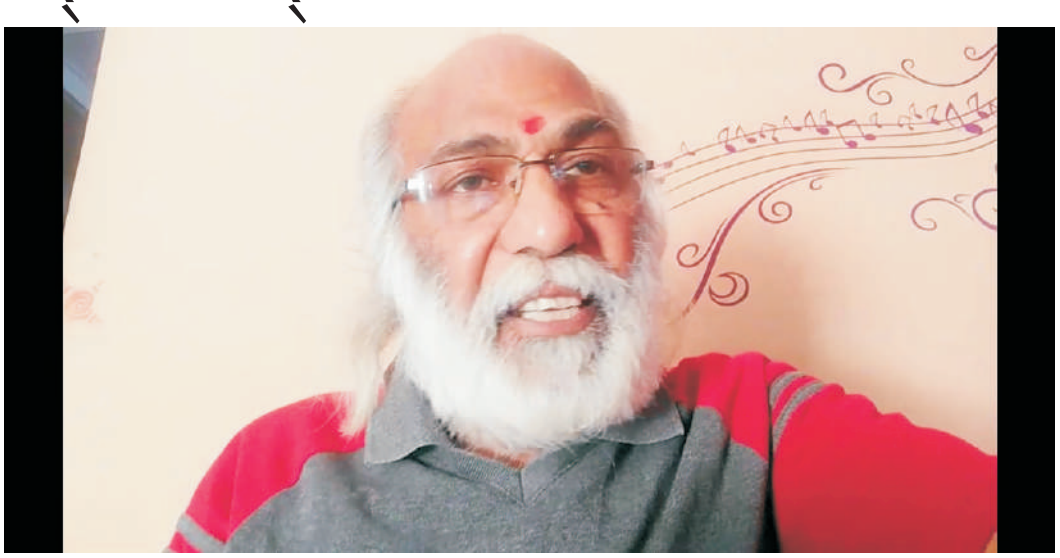

लेखक– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, 'रजक' संगीताचार्य, मथुरा

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथमाध्याय के प्रारम्भिक (12वें से 19वें) श्लोकों में ही कुरुक्षेत्र के मैदान में हुए भयानक युद्ध की घोषणा शत्रु–दलों के सैनिकों में एक–दूसरे को भयभीत करने हेतु बजाए गए शंखादि वा□ के भयंकर और दिल दहला देने वाले घोषों के साथ की गई है। शंखाध्वनि का प्रारम्भ कौरवों के सेना–नायक भीष्म पितामह द्वारा दुर्योधन के हृदय में उत्साह का संचार करते हुए किया गया–

तस्य सञ्जनयन् हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः।
सिंहनादं विन□च्चैः शंखंदध्मौ प्रतापवान्।।12।।

तत्पश्चात् अन्य सैनिकों के द्वारा शंख , भेरि, पणव आदिक विभिन्न प्रकार के वा□–यन्त्र भयंकर शब्द करते हुए एक साथ ही बज उठते हैं–

ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखारू।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोभवत्।।13।।

इसके पश्चात् श्वेत घोड़ों से युक्त उत्तम रथ में विराजमान श्रीकृष्ण एवं अर्जुन भी अलौकिक शंखों का वादन करते हैं–

ततः श्वेतै र्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः।।14।।

ये अलौकिक शंख कौन–कौन से हैं, इनका उल्लेख अगले दो श्लोकों में इस प्रकार हुआ है–

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौंड्रं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः।।15।।
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोष मणिपुष्पकौ।।16।।

उपर्युक्त 15वें व 16वें श्लोकों से स्पष्ट होता है कि हृषिकेश (भगवान् श्रीकृष्ण) ने पाञ्चजन्य, धनञ्जय (अर्जुन) ने देवदत्त, वृकोदर (भीम) ने पौंड्र, कुन्तीपुत्र राजा (युधिष्ठिर) ने अनंतविजय तथा नकुल और सहदेव ने क्रमशः सुघोष और मणिपुष्पक नामक अपने–अपने शंखों को बजाया। आगामी 3 श्लोकों में श्रेष्ठ धनुष वाले काशिराज, महारथी शिखण्डी, धृष्ट□न, राजा विराट, अजेय सात्यकि, राजा द्रुपद एवं द्रौपदी के पाँचों पुत्रों और बड़ी भुजा वाले सुभद्रा–पुत्र अभिमन्यु जैसे महारथियों द्वारा भी अलग–अलग ओर से अपने–अपने शंखों का वादन किया गया। उस महा भयानक ध्वनि से धृतराष्ट्रों के हृदय कम्पित हो उठे थे–

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः।
धृष्ट□म्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः।।17।।
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते।।
सौभद्रश्च महाबाहु शंखान्दधमुः पृथक पृथक।।18।।
स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्युम् नादयन्।।19।।

श्रीकृष्ण और पञ्च पाण्डवों द्वारा बजाए गए अद्भुत छः शंखों के नामोल्लेख से ही स्पष्ट होता है कि शंख भी निश्चित रूप से विविध आकार–प्रकार और विशेषताओं वाले होते हैं। शंख के सम्बन्ध में अनगिनत विद्वानों ने बहुत कुछ लिखा है। सार रूप में शंख के सम्बन्ध में यहाँ इतना ही बतलाना चाहेंगे कि यह समुद्र से प्राप्त अत्यधिक प्राचीन और परम प्राकृतिक वा□ है, जिसका वेदों में भी पर्याप्त उल्लेख मिलता है। शारंगदेव द्वारा वर्णित दस प्रकार के सुषिर वा□ में 10 वाँ टौर अन्तिम प्रकार शंख ही है। शंख का प्रयोग घरों और मन्दिरों में पूजा औरमणिपुष्पकरू
,,,,,

यश व कीर्ति और मान–सम्मान दिलाने में सहायता करने वाला यह शंख उच्च प्रतिष्ठा दिलाने में भी

ठाकुर–स्नान तथा आरती से लेकर विविध मांगलिक संस्कारों, मूहूर्तादि और शव–यात्राओं तक में समान रूप से किया जाता है। 1928 में बर्लिन यूनिवर्सिटी ने भी यह सिद्ध किया कि इसकी ध्वनि कीटाणुओं को नष्ट करने वाली होती है। औषध के रूप में भी इसका प्रयोग होता है। युद्धारम्भ और समाप्ति की घोषणा भी शंखध्वनि के द्वारा ही की जाती रही है। युद्ध के समय शत्रु–दल में घबराहट और बेचैनी पैदा करने तथा अपने सैनिकों में उत्साह पैदा करने हेतु इसका प्रयोग किया प्राचीन काल से होता आ रहा है। हुम् युम्, धो, दिगदिग जैसी भयंकर ध्वनियाँ उत्पन्न कर वीर योद्धागण शत्रुओं के हृदय कम्पित कर देते थे। इस प्रकार यह एक आयुध की भाँति भी कार्य करता था। भगवान् विष्णु के चार आयुधों में शंख का नाम ही सर्वप्रथम लिया जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में केवल श्रीकृष्ण और पाँचों पाण्डव–बन्धुओं द्वारा बजाए गए शंखों के नामों का ही उल्लेख है, अन्य महारथियों के द्वारा केवल शंख–ध्वनि किए जानेभर का उल्लेख है। हम इन छः प्रकार के शंखों की विशेषताएँ संक्षेप में बता रहे हैं–

पाञ्चजन्यरू
,,,,

पाञ्चजन्य एक बहुत ही दुर्लभ शंख है, जिसकी उत्पत्ति समुद्र–मंथन से प्राप्त 14 रत्नों में से 6 वें रत्न के रूप में हुई थी।इसमें पाँच उंगलियों जैसी आकृतियाँ बनी होती हैं। यह भी कहा जाता है कि इसके पाँच मुखों से एकसाथ ध्वनियाँ निकलती हैं। कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने इसी शंख का नाद कर पुराने युग की समाप्ति एवं नए युग के प्रारम्भ की घोषणा की थी। इस शंख की ध्वनि कई किलोमीटर दूर तक जाती थी। महाभारत के युद्ध में जब श्रीकृष्ण ने इसका उद्घोष किया तो पाण्डव–सेना में उत्साह और कौरव–सेना में भय व्याप्त हो गया था।

देवदत्तरू
,,

देवदत्त शंख का प्रयोग विजयश्री प्राप्त करने के उद्देश्य से धनञ्जय (अर्जुन) ने किया था। देवदत्त शंख को शक्ति के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। कहते हैं कि इसका उपयोग न्याय–क्षेत्र में विजय दिलाने वाला होता है। महाभारत के युद्ध का परिणाम सभी जानते हैं कि पाण्डवों को विजयश्री प्राप्त हुई।

पौंड्ररू
,,

पौंड्र शंख का उपयोग मनोबल को बढ़ाने में सहायक के रूप में माना जाता है। वृकोदर भीमसेन ने इस शंख का उपयोग इसी हेतु से महाभारत के युद्ध में किया था।

अनन्तविजयरू
,,,,,

ज्येष्ठ कुन्ती–पुत्र युधिष्ठिर द्वारा इस शंख का उपयोग महाभारत के युद्ध में किया गया था। इसके नाम से ही स्पष्ट है कि इसका उपयोग केवल सर्वकालिक विजय प्राप्ति के लिए ही होना चाहिए और महाभारत में हुआ भी यही।

सुघोषरू
,,

सुघोष शब्द से ही यह ज्ञात हो जाता है कि इस शंख की ध्वनि ऐसी होती होगी जिसे सुन उत्साहवर्द्धन होता होगा। इस शंख का उपयोग नकुल ने महाभारत के युद्ध में इसी हेतु से किया होगा।

मणिपुष्पकरू
,,,,,

यश व कीर्ति और मान–सम्मान दिलाने में सहायता करने वाला यह शंख उच्च प्रतिष्ठा दिलाने में भी सहायक होता है। पाँच पाण्डवों में सबसे कनिष्ठ सहदेव द्वारा इस शंख का वादन इसी हेतु से महाभारत के युद्ध में किया गया होगा। यहाँ यळ भी जान लेना आवश्यक है कि वादन में प्रयुक्त किए जाने वाले शंख की बनावट साधारण शंख से कुछ पृथक होती थी। अनेक ग्रन्थों में उल्लेख है कि वैदिक काल में शंख पर भी विविध स्वरों की उत्पत्ति कर उसे संगति के रूप में प्रयुक्त किया जाता था। एक संगीतोपासक, अनुसन्धित्सु एवं सङ्गीत चिकित्सक होने के नाते मैंने विगत ढाई दशक पूर्व ही शंख एवं मन्दिरों में प्रयुक्त मंजीरे, घण्टे, घड़ियाल आदि पर गहन शोध–कार्य प्रारम्भ कर दिए थे। और जब आरती में प्रयुक्त घण्टों को लेकर घण्टा तरंग का निर्माण कर एवं शंख पर आरती श्ध् जय जगदीश हरेश का लोकार्पण के समय वादन करके दिखाया तो दर्शकगण ठगे–से रह गए।शंख पर पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होने के कारण मैं लेख को विस्तार देना उचित नहीं समझता।अब मैं बात करना चाहूँगा उन वा□ की जो शंख के अतिरिक्त बजाए गए थे अथवा बजाए गए होंगे। श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम अध्याय में श्लोक संख्या 13 में शंख के अतिरिक्त भेरि, पणव, आनक, गोमुखा आदि वा□ के युद्ध के समय बजाए जाने का उल्लेख मिलता है। हम यहाँ रण– भूमि में बजाए जाने वाले उन वा□ का उल्लेख कर रहे हैं जो उस समय अवश्य बजाए गए होंगे। ये वा□–यन्त्र इस प्रकार हैं–

भेर/भेरि/भेरी/नगाड़ारू
,,,,,,,

भेरि नामक यह वा□ प्याली या शंकु के आकार की मिट्टी या धातु निर्मित दो नुकीली चोपों या चोबों द्वारा खाल पर प्रहार कर बजाया जाता है। इसे नगाड़ा, नक्कारा, दुन्दुभि या निशान अथवा निसान जैसे नामों से भी जाना जाता है। जब यह वा□ जोड़ी में न होकर अकेला ही वृहदाकार बनाकर कई–कई वादकों द्वारा चोपों से प्रहार कर बजाया जाता है, तब इसे नाद या बम्ब के नाम से पुकारा जाता है, जिसकी ध्वनि बेहद गम्भीर हो जाती है। भेरि या नगाड़े को सेना के आगे–आगे चलने वाले हाथी, घोड़े अथवा ऊँट पर सवार सैनिक बजाते चलते थे। आज भी जुलूसों में हाथी, घोड़े या ऊँट पर सवार नगाड़ा वादकों को प्रायः सभी देखते ही हैं।रू

तुरहीरू
,,,

तुरही लगभग चार हाथ लम्बी होती है, जिसे प्रायः धातु की पोली नली से बनाया जाता है। इसकी आकृति सीधी अथवा अर्द्ध चन्द्राकार होती है। शंख की भाँति इसमें में भी मुख–रन्ध्र के अतिरिक्त कोई छिद्र नहीं होता। इसकी ध्वनि भी शंख की भाँति ही होती है। पर फूँक के विभिन्न दबावों के द्वारा दो–तीन स्वर तक उत्पन्न किए जा सकते हैं। इससे ध्वनि बहुत तीव्रता के साथ निकलती है।

रणसिंहा/रणसिंघा/नरसिंघारू
,,,,,,,,

यह वा□ सामान्यतः भैंसे या हरिण के सींग का बना होता है।इसे धातु से भी बनाया जाता है। इसमें से तीन–चार स्वर ही निकल पाते हैं और उन्हें बजाने के लिए कण्ठ से उत्पन्न ध्वनि को दबाकर वायु के माध्यम से इसे बजाना होता है। इसकी ध्वनि शंख जैसी ही होती है। प्राचीन समय में युद्ध के समय इसका प्रचुरता से प्रयोग होता था। इसे सिंगी, धुधुका, रमतूला, विषाण, रमतूला, सिंगा (सिंघा), नरसिंगा, श्रृंग, श्रृंगिका जैसे नामों से भी जाना जाता है।

ढोलरू
,,

ढोल लकड़ी का बना बेलनाकार अवनद्ध वा□ होता है, जो अन्दर से कतई खोखला होता है। इसके दोनों मुख चमड़े से मढ़े रहते हैं। इसे बजाने के लिए बाएँ ळाथ से लकड़ी से एवं दाएँ हाथ के पंजे व हथेली से ताड़न या प्रहार किया जाता है। इसकी अनेक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिन्हें श्मांदलश आदि नामों से जाना जाता है।

काहली/तुरतुरी चुक्कारू
,,,,,,,

तीन हाथ लम्बा यह वा□ लोहे, ताँबे अथवा सोने का बना होता है। इससे श्हाश श्हूश इत्यादि ध्वनियाँ निकलती हैं। काहली का प्रयोग वीरों के विरुदोच्चारण के लिए होता है। जब काहली कि लम्बाई दो हाथ की कर दी जाती है तो इसे श्तुण्डकिनीश कहते हैं। तुण्डकिनी का नाम श्तुरुतुरीश या श्तितितिरीश भी है। इस वा□ को जोड़े के साथ बजाया जाता है। यही वा□ जब चार हाथ लम्बा बना दिया जाता है, तब इसे श्चुक्काश कहते हैं। इन सभी वा□ का प्रयोग रण–क्षेत्र में वीरों के उत्साहवर्द्धन हेतु किया जाता है।

पटहरू
,,,

पटह का अवनद्ध वा□ में बहुत ही प्रमुख स्थान है। ढाई हाथ लम्बी मार्ग–पटह को खैर अथवा लाल चन्दन की लकड़ी से बनाया जाता था। इसकी परिधि साठ अंगुल होती थी तथा मध्य भाग अधिक मोटा रहता था। दायीं मुहार की चौड़ाई साढ़े ग्यारह अंगुल तथा बायीं मुहार की दस अंगुल होती थी। इसके दोनों मुख खाल से मढ़े होते थे। इसमें –
क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, र और ह वर्ण निकलते थे। बायीं ओर के पुड़े पर हाथ से श्देड्श तथा दायीं ओर के पुड़े पर श्झेड्श ध्वनियाँ उतपन्न की जाती थीं। इसको दण्ड और हाथ, दोनों से ही बजाया जाता था। इससे अट्ठासी प्रकार के बोल निकलते थे। यही कारण है कि इसका प्रयोग गीत के अनुकरण के साथ–साथ नाटक और रण–भूमि में भी किया जाता था।

समृद्ध भारत समृद्धि

भारतीय अर्थव्यवस्था बनेगी वैश्विक आवश्यकता

हमारा देश कृषि प्रधान कहलाता है, परंतु कुछ समय से कृत्रिम चकाचौंध से अंधे हो कर हम पश्चिमी सभ्यता की मृग मरीचिका के लुभावने जाल में जकड़ गए थे, अपना स्वधर्म कृषि व पशुपालन से विमुख होकर हम ने प्राकृतिक संपन्नता और कागजी टुकडों के मायाजाल में फंस कर पुष्ट करते रहे मलेच्छ सभ्यता को , हम भूल गए कि सोने की चिड़िया कहलाने वाले हमारे देश की धरती से निकलने वाले खनिज पदार्थ , मसालों, रेशमी वस्त्रों की मांग धरती पर ही नहीं अपितु लोकान्तरों में भी थी यही नहीं अखंड भारत भूमि के तो पत्थर भी ब्रह्मांडी ऊर्जा के सवांहक का अंधाधुंध दोहन किया होने की गुणवत्ता रखने के कारण आज भी अनमोल हैं, इसी समृद्धि के कारण अनेक सभ्यताओं के साथ भारतवर्ष के व्यापारिक संबंध थे, अनेक सभ्यताओं ने हमारे भारत वर्ष के शासकों व प्रजा सभी का उदारता का लाभ उठाया कालांतर में मलेच्छ सभ्यता की ईस्ट इंडिया कंपनी ने व्यापार करने के लिए भारत वर्ष में प्रवेश किया उस समय तक भी हम स्वर्णिम दौर में स्थित थे ,भारतवर्ष की समृद्धि व यहां व्यापारिक संभावनाओं को समझते हुए कूटनीति के माहिर इन अंग्रेजों ने हमारे तत्कालीन शासकों की उदारता व सहृदयता व भोलेपन का अत्यंत ही नीचता पूर्ण लाभ उठाते हुए फूट डालो और शासन करो कि अपनी कपट पूर्ण नीति का प्रयोग करते हुए हमारा सामाजिक आर्थिक व संगठित राज्यों का भी विघटन करना प्रारंभ कर दिया अपनी धूर्तता पूर्ण गतिविधियों को संचालित करते हुए क्रम से व्यापारिक मेहमान बन के आई इस कंपनी ने हमारी शिक्षा व्यवस्था से लेकर आर्थिक ढांचे में भी हस्तक्षेप प्रारंभ कर दिया और धीरे–धीरे अपनी कूटनीति योजना अनुसार हमें गुमराह करने में सफलता प्राप्त करने के साथ ही हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था में भी अपनी घुसपैठ कर अपने आप को हमारा शासक ही घोषित करना शुरू कर दिया। ऐसी विषम परिस्थितियां निर्मित कर वे हमारे व्यापारिक शैक्षिक व राजनीतिक क्षेत्रों पर कब्जा करते चले गए अंततः परिणाम स्वरूप हमने स्वतंत्रता हेतु संग्राम किया और किसी प्रकार इन्हें अपने देश से भगाने में कामयाब तो हुए परंतु इनके द्वारा भ्रमित हमारे देश के राजनीतिक संगठनों द्वारा इनकी ही कार्यप्रणाली का आश्रय लेने का ही परिणाम है कि हम अपना परंपरागत स्वर्णिम युग पुन स्थापित नहीं कर पाए। हमारी शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन कर इन्होंने हमारी मानसिकता का, प्राकृतिक संपदा का सदुपयोग कर मानव सभ्यता को समृद्ध बनाएं रखने के चिंतन से विमुख कर व्यक्तिगत सुखों के उपयोग तक सीमित कर दिया था।परंतु आज प्रकृति को जड़ व असहाय मानकर व्यक्तिगत स्वार्थ व विलासिता हेतु प्राकृतिक संपदा का दोहन कर नैतिक मूल्यों को धराशाई करने वाली इनकी नीतियों के प्रचार प्रसार के कारण अपनी ही प्रजाति के शत्रु बने मानव के सामने उसके कृतियों के परिणाम स्वरूप प्रकृति का क्रोधित मात्र स्वरूप जीवंत है प्रकृति के गर्भ में स्थित कोरोना नामधारी वायुमंडलीय जीवाणु को अपनी मानसिक विकृति के अनुसार निर्मित करने हेतु संचित कर उससे मनचाहा कार्य लेने के इच्छुक इस मानव को प्रकृति ने बता दिया कि समर्थ कौन है प्राकृतिक संपदा का अनैतिक दोहन कर अपने आप को धनवान मानकर संपत्ति का दुरुपयोग करना वर्चस्व स्थापित हेतु धन का उपयोग आतंकवादी गतिविधियों के संचालन में करना जिह्वा लोलुपता हेतु मानव भ्रूण का रसास्वादन कर अपने आप को विकसित मानने का दम्भ करना ,उफ ! कहां तक सहन करती हमारी जीवन को सौंदर्य विद से अपूरित देखने की अभिलाषा रखने वाली यह जीवंत प्रकृति मानव के इस विविध को कृत सजा देने में भी उसने अपने वात्सल्य भाव का परित्याग नहीं किया अपितु सिर्फ कैद किया है , अपने आंचल में जिसे हम धनवान धातु से श्रंगारित कर अपने आपको सभ्यता के विकास का सूत्रधार मान बैठे थे और बिखेर दी है उसने अपनी सस्य श्यामल जुल्फों की घटा और यही छाया हमें देगी उजागर हम उसका सदुपयोग करने की चेतना प्राप्त कर सकेंगे तभी पुनः मानव सभ्यता वास्तविक विकास के पथ प्रगतिशील हो सकेगी पृथ्वी शस्य शालिनी ऐसा चिंतन देने वाले मनीषियों की धात्री यह भारत भूमि फिर से आमंत्रित करेगी अपने पोषक तत्त्वों व जीवनी शक्ति से भरपूर खा□ पदार्थों का सेवन कर निरीह हो चुकी मानव सभ्यता को पुनः उर्जानिवत होने के लिए एक ब ार फिर से हमारा भारत वर्ष केंद्र होगा व्यापार का संपूर्ण मानव प्रजाति के साथ ही हमारी गतिविधियों को भी आकर्षित करेगी फिर से दूसरे ग्रहों की सस्थाओं को भी हमसे सपंर्क हेतु और इस प्रकार भारतवर्ष एक बार फिर अपने स्वर्णिम युग में प्रवेश करेगा और गुंजायमान होगा सांस्कृतिक आदान–प्रदान का सुमधुर झंकृत नाद।

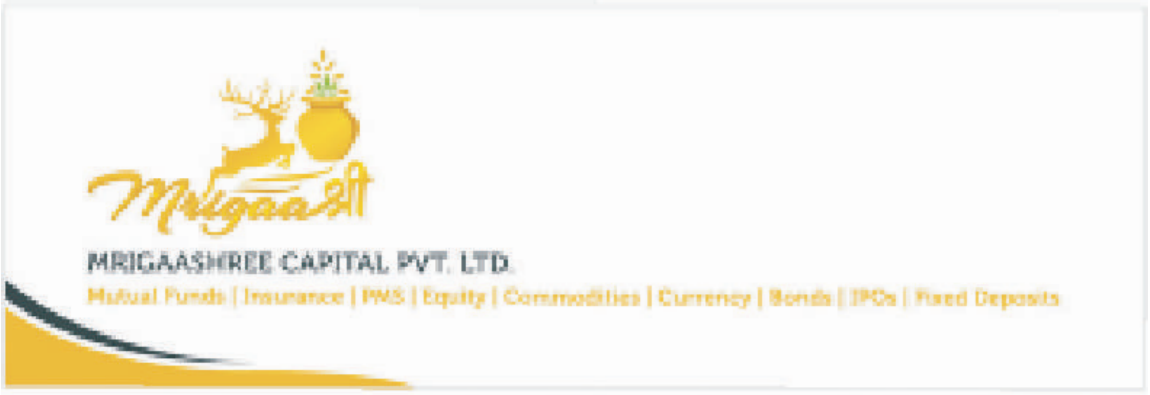

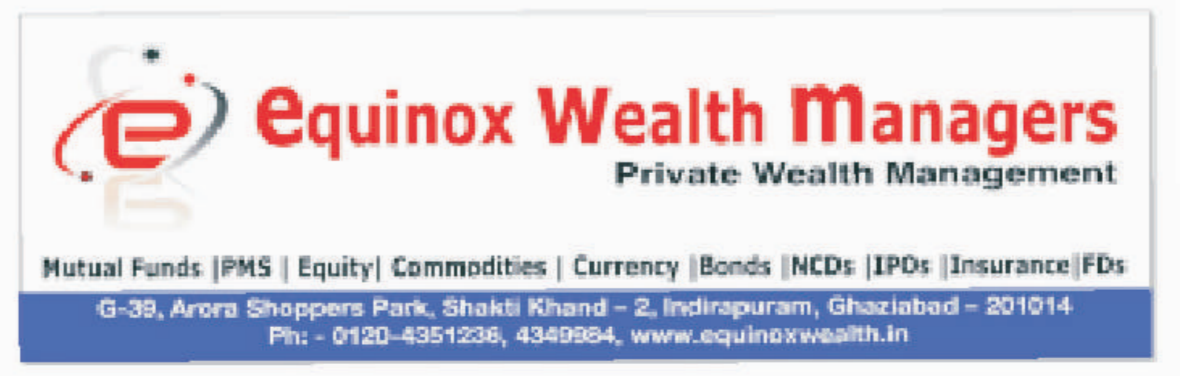

खेल व सिनेमा पर कोरोना के कहर का समाधान

तय शुदा है कि आगामी कुछ समय तक मैदानी खेलों व मनोरंजक सिनेमाओं पर इस महामारी का प्रभाव रहेगा। मैदानी खेलों का आयोजन व नए मनोरंजक सिनेमा के निर्माण में बाधा होगी। परंतु यहां भी हमें निराश नहीं होना है। हम अपने घरों में बौद्धिक क्षमता विकसित करने वाले अंताक्षरी शतरंज जैसे खेलो द्वारा बौद्धिक व्यायाम के साथ मनोरंजन भी कर सकते हैं। ताश के पत्तों के द्वारा भी अनेक प्रकार के सृजनात्मक खेल खेले जा सकते हैं। बैडमिंटन, टेबल– टेनिस, लॉन–टेनिस जैसे खेलों में शारीरिक स्फूर्ति के साथ मानसिक उर्जा प्रदान करने में सक्षम साबित होंगे उपरोक्त कुछ खेलों के साथ और भी अनेक प्रकार के खेल हम अंतर्जालीय माध्यम से भी खेल सकते हैं। इनमें और अधिक जीवंतता लाने के लिए हमारी संस्था नाद अनुसंधान द्वारा अंतर्जालीय माध्यम से इन खेलों में ऑनलाइन प्रतियोगिताओं की व्यवस्था भी की जा रही है। इसी प्रकार सिने जगत के कलाकार कला का घर में रह कर भी सफल प्रदर्शन कर संप्रेषित कर सकते हैं । रेडियो जॉकीओं द्वारा अपने घरों में रहकर ही कार्यक्रमों की निरंतरता बनाए रखना इस क्षेत्र का अन्नयतम उदाहरण है। इसी प्रकार प्रसिद्ध अनुमनीय कलाकारों द्वारा अभिनय के क्षेत्र में रुचि रखने वालों का मार्गदर्शक भी किया जा सकता है। इससे जहां अभिनय व कला के क्षेत्र में रूचि रखने वालों को शिक्षा मिलेगी वही इस क्षेत्र में विकास के नए नए अनुसंधान व कार्यक्षेत्र के आयाम विकसित होंगे।

हम निर्देशित मानकों के अनुसार व्यक्तियों की यूनिट के साथ भी सामाजिक ,आर्थिक, पर्यावरणीय विषयों पर जागृति चेतना फैलाने वाले सजीव वृत चित्रों (डॉक्यूमेंट्री) का निर्माण भी कर सकते हैं। लुप्त प्राय हो रही कटपुतली के मनोरंजक कार्यक्रम के हमारी संस्था द्वारा ऑनलाइन प्रसारण की योजना भी हम क्रियान्वित करने वाले हैं। इस मत हेतु इस विद के प्रदर्शन करने वालों को हमारा आमंत्रण है कि वह हमारी साइट फेसबुक या दूरभाष पर संपर्क करें। इन सभी संभावनाओं को देखते हुए हमें जरा भी निराश नहीं होना है ना अनुसंधान सम्बंन्धित आर्थिक सांस्कृतिक किसी भी क्षेत्र में क्रियान्वित किए जा सकने वाले शोध कार्य के साथ अपने देशवासियों व मानवता का मार्गदर्शन करने हेतु तत्परता के साथ जुड़ा है हमें आपका सिर्फ इतना सहयोग चाहिए कि आप हमसे संपर्क करें हम सब साथ मिलकर एक बार पुनः संपूर्ण मानवता को कुटुंबम त्रिलोक्यम के सिद्धांत की सार्थकता सिद्ध करके दिखा देंगे। शस्य– श्यामला वसुंधरा को पुनरू उस नाद से गुंजायमान करना है जिससे सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया की ध्वनि मुखरित हो सके। इसके लिए संपूर्ण भारतवर्ष को एकजुट होना होगा अखंड भारत की शक्ति ने हमेशा ही संपूर्ण विश्व का मार्गदर्शन किया है आज फिर से समय आ गया है कि हम भारत की महान गरिमा में शिक्षा का उदघोष करें हमारा विश्वास है कि हम नाद के संदेश को आत्मसात करेंगे संकटों के अजाब से निकलकर अखंड भारत के निर्माण हेतु अग्रसर होंगे और एक बार सही संपूर्ण विश्व देखेगा –

जीते किसी ने देश तो क्या ,हमने हमने तो दिलों को जीता है।
वह सिकंदर क्या जिसने, जुल्म से जीता जहां।

विशेष संवाददाता

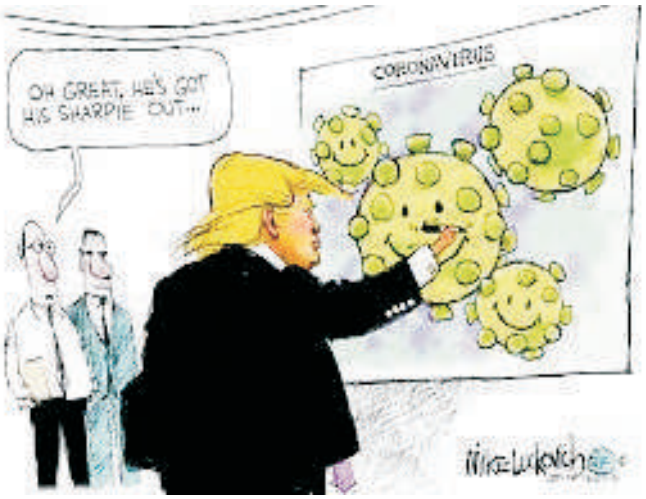

समृद्ध भारत वसुंधरा

आतंकवाद और पाकिस्तान

महामारी की महा त्रासदी, जिस ने समपूर्ण विश्व को पूर्ण रूप से नतमस्तक कर दिया है। सारा विश्व कोरोना वायरस से ग्रसित होकर कराह रहा है, इस दौर में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान और जनरल बाजवा अपनी धूर्तता पूर्ण साजिशों से बाज नहीं आ रहे हैं। पाकिस्तान संरक्षित आतंकवादी जो कि पाकिस्तान के क्षद्म युद्ध की नीति के अंतर्गत कार्य करते हैं, आए दिन सरहद पार से घुसपैठ की कोशिशों में लिप्त हैं।घाटी को आतंक मुक्त करने के लिए भारतीय सेना पूरी मुस्तैदी के साथ आतंक और आतंकवादियों के खात्मे के मिशन पर कार्य कर रही है, जिसमें सुरक्षा बलों को भी काफी शहादतें देनी पड़ती हैं वहीं पाकिस्तान की शासन व्यवस्था अपने पोषित आतंकवादियों को भारतीय सीमा में प्रवेश कराने हेतु सीमा पार से विभिन्न इलाकों में समय–समय पर हमला करते रहते हैं।महामारी के इस दौर में भी पाकिस्तान की इनकायराना हरकतों पर भी जाने इस विश्व समुदाय का ध्यान इनकी गतिविधियों की तरफ क्यों नहीं जाता?

एक ओर जहां विश्व में 4000000 से अधिक लोग संक्रमित हों चुके हैं और लाखों की संख्या में मृत्यु भी हो चुकी है अब भारतीय शासन को यह सोचना होगा कि वह कब तक क्षद्म युद्ध के जाल में फंसकर भारत अपने शूर वीरों की शहादत देता रहेगा? पाकिस्तान का यह रवैया निहायत ही शर्मनाक है और इनकी हरकतों में तनिक भी बदलाव नहीं है। अतः इसका एकमात्र विकल्प आर–पार का युद्ध है। जिससे आतंकवादियों को संरक्षण देने वाली सभी ताकते अपनी आंखों से आतंक का अंजाम देख ले और सचेत हो जाएं सभ्य समाज में आतंक के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए।यही एकमात्र विकल्प है जिससे मानवता की रक्षा की जा सके।

तरुण सिंह

क्या चीन ने फैलाई महामारी?

विश्व को अपने प्रभाव से दहलाने वाले कोरोना वायरस जिसने संपूर्ण विश्व में 40 लाख से अधिक लोगों को संक्रमित कर दिया है और 2.5 लाख से अधिक लोगों को मौत के मुंह में धकेल दिया है। साथ ही मृत्यु दर में कोई कमी नहीं आ रही संख्या लगातार बढ़ती जा रही है हर सेकेंड और मिनट मानव समाज को जोड़ने वाली भयानक दृश्य से 2,4 करा रहे हैं। इंग्लैंड जर्मनी और फ्रांस सहित यूरोपीय संघ के ज्यादातर देश चीन को इस महामारी का दोषी बता रहे हैं सबसे अधिक आक्रामक अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप महोदय हैं जिन्होंने यहां तक दावा किया है कि चीन के इस को कोरोना महामारी को फैलाने के पर्याप्त प्रमाण हमारे पास मौजूद हैं। साथ ही साथ विश्व स्वास्थ्य संगठन के ऊपर भी उन्होंने चीन का पक्षपात करने का आरोप लगाया और विश्व स्वास्थ्य संगठन की फंडिंग को रोक दिया है विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी अपनी जांच के आधार पर यह बयान दिया है कि कोरोना वायरस चीन के वुहान से ही निकला है और इसने ईरान ,इटली सहित विश्व के सभी देशों को अपनी चपेट में ले लिया है। प्रारंभ में अमेरिका ने थोड़ी ज्यादा ही निडरता का परिचय दिया कहीं उनकी अर्थव्यवस्था प्रभावित ना हो इसके लिए उन्होंने अमेरिका में लॉक डाउन नहीं लगाया। अब स्थिति यह है कि हमारी का सबसे अधिक प्रभावित है वहां संक्रमण और मृत्यु दर सर्वाधिक है लॉकडाउन पर निर्णय करते–करते अमेरिका ने इतना वक्त लगा दिया कि वह विश्व में पहले स्थान पर महामारी से ग्रसित देशों में कायम हो गया। हालांकि दूसरी ओर अमेरिका ने यह दावा भी किया है कि वह दवा के निर्माण के काफी करीब है साथ ही वैक्सीन के निर्माण के भी करीब पहुंचने वाला है इसके ऊपर वह शीघ्र ही परीक्षण भी करेगा अमेरिका के अतिरिक्त इटली दक्षिण कोरिया इजराइल आदि देशों ने समय–समय पर दवा की खोज के संदर्भ में दावे किए जिसका कोई सार्थक निराकरण अभी तक दृष्टिगत नहीं हुआ है इसमें कोई संदेह नहीं कि विश्व के समस्त वैज्ञानिक पुरजोर कोशिश के साथ दवा और वैक्सीन की खोज में जुटे हुए हैं हम तो ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि किसी को तो जल्दी से जल्दी सफलता मिले ताकि मानव समाज को इस भयंकर त्रासदी से मुक्ति मिल सके।

तरुण सिंह

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
नाद अनुसंधान ट्रस्ट(पंजीकृत)
प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी
तकनीकि सहयोग– सभ्यता सिंह
सम्पादकीय विभाग
संपादक–तरुण सिंह
सह–संपादक–अभय प्रताप सिंह– संस्कृति सिंह
विशेष संवाददाता– तनुज कुमार